केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी

की

शोध–कार्य–योजना

2014–15

''वाग्गेयकार ध्रुवपदाचार्य पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग 'संगीत वारिधि' द्वारा प्रणीत बन्दिशों का संकलन, संग्रहण, संरक्षण एवं संवर्द्धन''

शोधकर्ता

डॉ. श्याम सुन्दर शर्मा

एम.ए., पीएच.डी., (संगीत) 'ध्रुवपद गायक'

शोध–कार्य–योजना

''वाग्गेयकार ध्रुवपदाचार्य पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग 'संगीत वारिधि' द्वारा प्रणीत बन्दिशों का संकलन, संग्रहण, संरक्षण, एवं संवर्द्धन''

''प्रतिवेदन''

केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली द्वारा कलाकारों एवं संस्थाओं को दिये जाने वाली आर्थिक अनुदान की व्यक्तिगत योजना के अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2014–15 में मुझे शोध–कार्य–योजना – **''वाग्गेयकार ध्रुवपदाचार्य पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग 'संगीत वारिधि' द्वारा प्रणीत बन्दिशों का संकलन संग्रहण, संरक्षण, एवं संवर्द्धन''** फाईल नं. 10–2/एफए/2014–15/11128 दिनांक 27.02.2015 पर आर्थिक अनुदान 1,50,000/– (एक लाख पचास हजार रूपये) पारित किया गया है।

इस शोध–कार्य–योजना के अन्तर्गत मैंने वाग्गेयकार, ध्रुवपदाचार्य पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग द्वारा प्रणीत बन्दिशों का संकलन पं. जी की परम्परा के वाहक उनके पुत्र एवं पुत्री पं. रविशंकर भट्ट तैलंग, सुविख्यात ख्याल गायिका डॉ. निशा भट्ट तैलंग, सुविख्यात ध्रुवपद गायिका डॉ. मधु भट्ट तैलंग एवं आरती भट्ट तैलंग से किया, साथ ही आपकी समृद्ध शिष्य–परम्परा से भी उनकी मंचीय–प्रस्तुतियों से किया।

इस कार्य–योजना में पं. जी द्वारा प्रणीत बन्दिशों को पं. जी की शिष्य–परम्परा से गवा कर इन बन्दिशों को ध्वन्यांकन रूप में भी संरक्षित

किया गया है। पं. जी द्वारा प्रणीत बन्दिशों को संकलित कर मुद्रित रूप में भी इस कार्य–योजना में शामिल किया गया है।

पं. जी द्वारा प्रणीत बन्दिशों के उन्हीं के द्वारा गाये गये उपलब्ध पुराने ध्वन्यांकन को उनके संरक्षण की दृष्टि से रिकार्डडिंग स्टूडियो में उनको सी. डी. व डी.वी.डी. में परिवर्तित करवा कर इन अप्राप्य रचनाओं को संरक्षित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया गया है।

पूर्व में प्रस्तुत कार्य–योजना के लिए लगभग अनुमानित व्यय 13,52,300/– (तैरह लाख बावन हजार तीन सौ रूपये) मांगा गया था किन्तु केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी द्वारा इस शोध–कार्य–योजना के लिए मात्र 1,50,000/– (एक लाख पचास हजार रूपये मात्र) की ही राशि स्वीकृत की गई। प्रस्तावित कार्य–योजना के विस्तार की तुलना में अकादमी द्वारा स्वीकृत सीमित आर्थिक अनुदान एवं स्वयं के सीमित आर्थिक संसाधनों से कार्य योजना को क्रियान्वित करने का प्रयास किया गया है, जो मैं संलग्न लिखित दस्तावेज़ों, सी.डी. एवं उपयोगिता प्रमाण–पत्र सहित प्रस्तुत कर रहा हूँ। इस सन्दर्भ में प्रतिवेदन प्रस्तुत है।

डॉ. श्याम सुन्दर शर्मा

एम.ए., पीएच.डी., (संगीत) 'ध्रुवपद गायक'

अनुक्रमणिका

		पृ.सं.
अ.	**पं. लक्ष्मण भट्ट तैलंग द्वारा प्रणीत बंदिशों की क्रमवार सूची**	
1.	राग – मियांमल्हार	1 – 3
	बड़ा ख्याल – बरसन लागी...	
	छोटा ख्याल – उमड़े घन घोर बदरा...	
2.	राग – किरवाणी	4 – 6
	ध्रुवपद – माता भवानी...	
	छोटा ख्याल – डगमग डोले मोरी नैया...	
3.	राग – सरस्वती	7 – 8
	छोटा ख्याल – मन नाही माने...	
4.	राग – हंसध्वनि	9 – 10
	ध्रुवपद – जयति जय श्री गोविंद...	
5.	राग – शंकरा	11 – 12
	ध्रुवपद – ऊँ नमः शिवाय...	
6.	राग – शुद्ध कल्याण	13
	छोटा ख्याल – मन मोहन मेरो...	
7.	राग – कामोद	14
	छोटा ख्याल – बार बार न छेड़ों...	
8.	राग – मालकौंस	15
	बड़ा ख्याल – बनरा मोरा आया...	

9.	राग – अल्हैया बिलावल	16 – 19
	ध्रुवपद – आज बधाई...	
	बड़ा ख्याल – एरि आज गोकुल...	
10.	राग – भिन्न षड़ज	20 – 21
	ध्रुवपद – जयति जय श्री ...	
11.	राग – झिंझोटी	22
	छोटा ख्याल – कौन जतन करि...	
12.	राग – देवगिरी बिलावल	23 – 24
	ध्रुवपद – अधरन मुरली धरन...	
13.	राग – विभास	25
	छोटा ख्याल – ननदिया कैसे भरूं...	
14.	राग – मालगुंजी	26 – 27
	छोटा ख्याल – मन नहीं माने...	
15.	राग – जोगिया	28 – 29
	छोटा ख्याल – हरि सों नेह...	
16.	राग – शुद्ध सारंग	30 – 31
	बड़ा ख्याल – तपन लागी कारी...	
17.	राग – गुणकली	32 – 33
	छोटा ख्याल – तू ही करतार सकल...	
18.	राग – नटभैरव	34
	बड़ा ख्याल – सांचो मेरो दाता...	
19.	राग – श्याम कल्याण	35 – 36

	बड़ा ख्याल – अजहूँ नहि आये...	
20.	राग – मधुवन्ती	37 – 40
	धमार – मानत नाहीं...	
	बड़ा ख्याल – सांचो तेरो नाम...	
	छोटा ख्याल – सुमिरन कर ले मेरे...	
	त्रिवट – क्ड़ान्धा, क्ड़ान्धा...	
21.	राग – मध्यमाद सारंग	41
	छोटा ख्याल – जाने दो मोहे छैल...	
(ब)	**सी.डी. व अन्य दस्तावेज़**	
	ध्वन्यांकन सामग्री	
	फोल्डर–1	
	संकल्प, नट भैरव, कलावती, जोग, जोगेश्वरी, आभोगी, गोरख कल्याण, शोभावरी, बैरागी	
	फोल्डर–2	
	मुल्तानी, आभोगी कान्हड़ा	
	फोल्डर–3	
	नटभैरव	
	फोल्डर–4	
	गौड़ सारंग	
	फोल्डर–5	
	चन्द्रकौंस, मेवाड़ा दरबारी	
	फोल्डर–6	

	किरवानी–पचरंग	
	फोल्डर–7	
	केदार	
	फोल्डर–8	
	हिंडोल	
	विडियो – रामजन्मोत्सव संगीत समारोह, गलता पीठ – ध्रुवपद जुगलबंदी	
	विडियो – अभिनंदन–2016, संगीत समारोह – ध्रुवपद जुगलबंदी	
	• **शोध–कार्य–योजना प्रतिवेदन**	
	• **उपयोगिता प्रमाण–पत्र**	

राग – मियां मल्हार

विलम्बित एकताल

रचना–साहित्य

स्थायी : बरसन लागी कारी बदरिया आये मोरे सांवरिया।

अन्तरा : तरफत हूं जैसे–जल बिन मछरिया,
बिरहा की मारी फिरूँ बावरिया।

स्थायी

मम	रेसा	नीनी	मप	नीध	नीध	नी	–सा	रेरे	रे–	सा	नीसा
बर	सन	लाऽ	गीऽ	काऽ	ऽऽ	री	ऽब	दऽ	रीऽ	या	ऽऽ
3		4		X		0		2		0	
म	(म)	रे	पप	प–	प–	म–	पनी	ग	गम	रे	–
आ	ऽ	ये	ऽन	मो	रेऽ	सांऽ	ऽऽ	व	ऽरि	या	ऽ
3		4		X		0		2		0	

अन्तरा

मरे	पप	नीधनीध	नीनी	सां	सां	सां	सांसां	सां	रें	सां	नीसां
तर	फत	हूंऽऽऽ	जैसे	ज	ल	बि	न म	छ	रि	या	ऽऽ
3		4		X		0		2		0	
गं	गंमं	रें–	सांसां	नीसारें–	सांनीसां	गग	गम	रे	रे	सा	नीसा
बि	रऽ	हाऽ	कीऽ	माऽऽऽ	रीऽऽ	फिरूं	ऽबा	व	रि	या	ऽऽ
3		4		X		0		2		0	

राग – मियां मल्हार

छोटा–ख्याल

ताल–एकताल

रचना–साहित्य

स्थायी : उमड़े घन घोर बदरा, होये बिरहि व्यथा मन।
श्याम घटा सी बन बन, कारी कारी डरपाए।।

अन्तरा : गरजा–गरज चहुं ओर, भोर करत शोर।
तैसी ये निश अंधियारी, श्यामल छवि दरसाये।।

स्थायी

रे	सा	ध़नी़	प़	म़	प़	नी़	ध	नी़	नी़	सा	सा
उ	म	डे	ऽ	घ	न	घो	ऽ	र	ब	द	रा
X		0		2		0		3		4	
नी़	नी़	सा	–	रे	सा	रे	प	ग	म	रे	सा
छा	ऽ	ये	ऽ	बि	र	हि	व्य	था	ऽ	म	न
X		0		2		0		3		4	
म	रे	प	प	नी	ध	नी	सां	नी	सां	सां	सां
श्या	ऽ	म	घ	टा	ऽ	सी	ऽ	ब	न	ब	न
X		0		2		0		3		4	
सां	–	पनी़	प	म	प	मग	मग	म	रे	रे	सा
का	ऽ	रि	का	ऽ	री	ड	र	ऽ	पा	ऽ	ये
X		0		2		0		3		4	

अन्तरा

म	प	नी	ध	नी	नी	सां	सां	नी	रें	सां	–
ग	र	ज	ग	र	ज	च	हूं	ऽ	ओ	ऽ	र
X		0		2		0		3		4	
नी	ध	नी	सां	सां	सां	रें	नीध	ध	ध	नी	प
मो	ऽ	र	प	पी	हा	क	र	त	शो	ऽ	र
X		0		2		0		3		4	
म	प	सां	–	नीं	पे	ग	ग	ग	म	रे	सा
तै	ऽ	सी	ऽ	ये	ऽ	नि	श	अं	धि	या	री
X		0		2		0		3		4	
सां	मं	रें	सां	नी	सां	ग	ग	म	रे	–	सा
श्या	ऽ	म	ल	छ	वि	द	र	सा	ऽ	ऽ	ये
X		0		2		0		3		4	

राग – किरवाणी

ध्रुवपद

ताल सूलताल

रचना–साहित्य

स्थायी : माता भवानी, अंबे जगदंबे।
जगत् निस्तारिणी, वर दे वर दे माँ।।

अन्तरा : शुंभ निशुंभ दुष्टदलनि महिषासुर मर्दिनी।
जगत् जननि जग सुखभर दे भर दे माँ।।

स्थाई

ध	प	ग	–	सा	रे	–	–	रे	–
मा	ऽ	ता	ऽ	भ	वा	ऽ	ऽ	नी	ऽ
X		0		2		3		0	
ग	–	रे	सा	रे	ग	ध	–	प	–
अं	ऽ	बे	ऽ	ज	ग	दं	ऽ	बे	ऽ
X		0		2		3		0	
नी	रें	नी	ध	नी	–	नी	ध	प	प
ज	ग	त	नि	स्ता	ऽ	ऽ	रि	ऽ	नि
X		0		2		3		0	
प	ध	सां	–	ध	प	ग	रे	रे	–
व	र	दे	ऽ	व	र	दे	ऽ	मां	ऽ
X		0		2		3		0	

अन्तरा

प	ध	प	ध	ध	नी	सां	नी	सां	सां
शुं	भ	नि	शुं	भ	दु	ष्ट	द	ल	नि
X		0		2		3		0	
नी	नी	रें	–	नी	ध	नी	नी	ध	प
म	हि	षा	ऽ	सु	र	म	र	द	नि
X		0		2		3		0	
गं	रें	सां	रें	सां	नी	ध	नी	सां	सां
ज	ग	त	ज	न	नि	ज	ग	सु	ख
X		0		2		3		0	
प	ध	सां	–	ध	प	ग	रे	रे	–
भ	र	दे	ऽ	भ	र	दे	ऽ	मां	ऽ
X		0		2		3		0	

राग – कीरवाणी
छोटा ख्याल
ताल–त्रिताल

रचना–साहित्य

स्थायी : डगमग डोले मोरी नैया डगमग डोले ।
तुम बिन मेरी कौन खिवैया सुध को लिवैया।।

अन्तरा : औघट घाट सूझत नाही। पार लगावो भव के तरैया ड।।

स्थायी

															ध ड
प	ग	–	रेसा	रे	–	रे	–	रे	ग	म	प	म–	प	ध	प
ग	म	ऽ	गऽ	डो	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	मो	री	नैऽ	ऽ	या	ड
3				X				2				0			
रे	ग	–	म	प	ध	प	नी	रें	नी	–	ध	नी	ध	प	–
ग	म	ऽ	ग	डो	ऽ	ले	तु	म	बि	ऽ	न	मे	ऽ	रो	ऽ
3				X				2				0			
ध	प	ग	रेसा	रे	–	रे	रे	ग	म	–	प	ध	–	प,	ध
कौ	ऽ	न	खिऽ	वै	ऽ	या	सु	ध	को	ऽ	लि	वै	ऽ	या,	ड
3				X				2				0			

अन्तरा

ध	म	प	ध	सां	–	–	सां	नी	रें	नी	ध	नी	ध	प	नी
औ	ऽ	घ	ट	घा	ऽ	ऽ	ट	सू	ऽ	झ	त	ना	ऽ	हीं	पा
3				X				2				0			
रें	नी	–	ध	नी	ध	प	–	ध	प	ग	रेसा	रे	–	रे,	ध
ऽ	र	ऽ	ल	गा	ऽ	वो	ऽ	भ	व	के	तऽ	रै	ऽ	या,	ड
3				X				2				0			

राग – सरस्वती
छोटा ख्याल
ताल त्रिताल (मध्यलय)

रचना–साहित्य

स्थायी : मन नाही माने कैसे समझाऊँ।
कासे कहुँ मैं जिय की बतियाँ।।

अन्तरा : इत उत भटकत फिरू बावरी सी ।
चैन न आवत बैरन भई रतियाँ।।

स्थाई

(नी)	पध	–	प	प	–	प	–	रे	×Þ	प	(प)	रे	–	सा	ऩी
न	ना	ऽ	ही	मा	ऽ	ने	ऽ	कै	से	स	म	झा	ऽ	हुं	काऽ
3				X				2				0			
–	सा	–	सा	रे	–	सा	–	×Þ	प	प	(प)	रे	रे	सा,	नी
ऽ	से	ऽ	क	हूं	ऽ	मैं		जि	य	की	ऽ	ब	ति	यां	म
3				X				2				0			

अन्तरा

×Þ

इ

प	नी	–	ध	सां	सां	सां	सां	नी	सां	रें	सां	नी	ध	प,		×Þ
त	उ	ऽ	त	भ	ट	क	त	फि	रूं	ऽ	बा	व	री	सी,		चै
3				X				2				0				
रें	नी	–	सां	ध	ध	प	प	×Þ	प	प	(प)	रे	रे	सा,	नी	
ऽ	न	ऽ	न	आ	व	त	बै	र	न	भ	ई	र	ति	यां,	म	
3				X				2				0				

राग – हंसध्वनि

ध्रुवपद

ताल–चौताल

रचना–साहित्य

स्थायी : जयति जय श्री गोविद,

धरनी घर माधो मुकुन्द, ग्वाल बाल आनंद कंद, पुरूषोत्तम परमानंद।।

अन्तरा : कंस निकन्दन, कालीया मरदन, भव भंजन।।

स्थाई

सां	नी	प	ग	रे	सा	प़	नी़	रे	ग	–	सा
ज	य	ति	ज	ऽ	य	श्री	ऽ	गो	विं	ऽ	द
X		0		2		0		3		4	
प़	प़	नी़	–	रे	रे	ग	ग	प	रे	–	सा
ध	र	नी	ऽ	ध	र	मा	धो	मु	कुं	ऽ	द
सा	–	पग	प	–	प	ग	प	प	नी	–	प
ग्वा	ऽ	ल	बा	ऽ	ल	आ	नं	द	कं	ऽ	द
X		0		2		0		3		4	
सां	सां	नी	–	प	प	ग	ग	प	रे	–	सा
पु	रू	षो	ऽ	त्त	म	प	र	मा	नं	ऽ	द
X		0		2		0		3		4	

अन्तरा

प	–	–	सां	–	सां	सां		सां	सां	रें	सां
कं	ऽ	ऽ	स	ऽ	नि	कं	ऽ	ऽ	द	ऽ	न
X		0		2		0		3		4	
प	प	–	नी	रें	रें	सां	नीरें	–	सां	–	सां
का	ऽ	ऽ	ली	ऽ	या	म	र	ऽ	द	ऽ	न
नी	नी	रें	नी	–	प	ग	ग	प	रे	–	रे
भ	व	ऽ	भ	ऽ	य	भं	ऽ	ऽ	ज	ऽ	न
X		0		2		0		3		4	
सां	–	नी	–	प	प	ग	–	प	रे	–	सा
का	ऽ	टो	ऽ	स	ब	द्वं	ऽ	द	फं	ऽ	द
X		0		2		0		3		4	

राग – शंकरा

ध्रुवपद

ताल–चौताल

रचना–साहित्य

स्थायी : ऊँ नमः शिवाय, गंगा घर उमापति।
भस्म अंग जटा घर, जगपति जगदधिताय।।

अन्तरा : नीलकंठ विषधर, दिगम्बर विषम्भर,
कर त्रिशूल डमरू, बहुरूप रूपाय।।

स्थायी

सां	–	नी	प	ग	ग	–	ग प	रे ग	–	सा	–
ऊँ	ऽ	ऽ	ऽ	न	म	ऽ	शि	वा	ऽ	य	ऽ
X		0		2		0		3		4	
सा प	–	सा	–	सा	सा	प ग	प ग	प	रे ग	–	सा
गं	ऽ	गा	ऽ	ध	र	उ	मा	ऽ	प	ऽ	ति
X		0		2		0		3		4	
सा	–	प ग	प	–	प	ग	प	–	प	नी	प
भ	ऽ	स्म	अ	ऽ	ग	ज	टा	ऽ	ध	ऽ	र
X		0		2		0		3		4	
सां	सां	–	नी	–	प	ग	ग	प–	ग	–	सा
ज	ग	ऽ	प	ऽ	ति	ज	ग	दि्ध	ता	ऽ	य
X		0		2		0		3		4	

अन्तरा

प	–	प	सां	–	सां	सां	सां	–	सां	रें	सां
नी	ऽ	ल	कं	ऽ	ठ	वि	ष	ऽ	ध	ऽ	र
X		0		2		0		3		4	
गं	गं	–	गंपुं	रैंगं	सां	सां	नी	–	प	नी	प
दि	गं	ऽ	बऽ	र	ऽ	वि	ष	ऽ	म्भ	र	ऽ
X		0		2		0		3		4	
ग	ग	प	नी	–	प	ग	ग	प	प	नी	प
क	र	त्रि	शू	ऽ	ल	ङ	म	रू	ध	ऽ	र
X		0		2		0		3		4	
सां	नी	नी	प	–	प	ग	–	प	रैंग	–	सा
ब	हू	ऽ	रू	ऽ	प	रू	ऽ	ऽ	पा	ऽ	य
X		0		2		0		3		4	

राग – शुद्ध कल्याण

छोटा–ख्याल

ताल–त्रिताल

रचना–साहित्य

स्थायी : मन मोहन मेरो बृज को रसिया।
सकल गोप ग्वालन मन बसिया।।

अन्तरा : नित नित आवत मन ललचावत।
नटखट चपल करत मीठी बतियाँ।।

स्थायी

गरे	सा	नी–	ध़	नी़	धप़	ध़	सा	–	रे	ग	रे	सा	–
मऽ	न	मोऽ	ह	न	मेरो़	बृ	ज	ऽ	को	र	सि	या	ऽ
0			3			X				2			
सा	सा	गरे	ग	ग	प–	×Þ	ग	ध	प	ग	रे	सा	–
स	कल	गो	ऽ	प	ग्वाऽ	ल	न	म	न	ब	सि	या	ऽ
0			3			X				2			

अन्तरा

ग	ग	प	ध	प	सां	सां	सां	सां	रें	गरें	सां	नी	धप
नि	त	नि	त	आ	ऽ	व	त	म	न	लल	चा	ऽ	वत
0			3			X				0			
नी	ध	प	ध	प×Þ	ग	रे	ग	प	रे	गरे	परे	सा	–
न	ट	ख	ट	चऽ	प	ल	क	र	त	मीठी	ब	ति	यांऽ
0			3			X				0			

राग – कामोद

छोटा ख्याल

ताल–त्रिताल (मध्यलय)

रचना–साहित्य

स्थायी : बार बार न छेड़ो कन्हाई मान, जाओ मैं करूँगी लड़ाई।
अबही जाय कह जसुमति माई,

अन्तरा : ऐसो नटखट तेरो लाला।
नित नित हमसों करत ढिठाई।।

स्थाई

रे	रे	प	प	ध	ध	प	–	ग	म	प	ग	म	रे	सा	–
बा	ऽ	र	बा	ऽ	र	ना	ऽ	छे	ऽ	डो	क	न्हा	ऽ	ई	ऽ
0				3				X				2			
रे	प	×Þ	प	ग	म	रे	सा	रे	रे	सा	नी़	ध़	ध़	प़	प़
मा	ऽ	न	जा	ऽ	ओ	मैं	ऽ	क	रूँ	गी	ल	रा	ऽ	ई	ऽ
0				3				X				2			
प़	प़	सा	सा	रे	रे	सा	सा	ग	म	प	ग	म	रे	सा	–
अ	ब	ही	जा	ऽ	य	क	हूँ	ज	सु	म	ति	मा	ऽ	ई	ऽ
0				3				X				2			

अन्तरा

प	प	सां	–	सां	रें	सां	–	गं	मं	पं	गं	मं	रें	सां	–
ऐ	ऽ	सो	ऽ	न	ट	ख	ट	ते	ऽ	रो	ऽ	ला	ऽ	ला	ऽ
0				3				X				2			
सां	रें	सां	नी	ध	ध	प	प	ग	म	प	ग	म	रे	सा	–
नि	त	नि	त	ह	म	सौ	ऽ	क	र	त	ढ़ि	ठा	ऽ	ई	ऽ
0				3				X				2			

राग – मालकौंस

बड़ा ख्याल

ताल–झूमरा

रचना–साहित्य

स्थायी : बनरा मोरा आया सलोना प्यारा
सोहे सोहे मोतियन सेहरा।

अन्तरा : सज धज आई सुघर बनी के
नैनन कजरा सजाया।।

स्थायी

गम	गसा	(नी)ध	नीसाग	ध	नी	सा	ग	गम	ग	सा	ग	सा	–
बऽ	न	राऽ	मोऽरा	आ	या	ऽ	स	ऽऽ	लो	ना	प्या	रा	ऽ
3				X			2				0		
ध	–	नी	सा	म	–	म	सा	नी	ध	म	मगम	ग	सा
सो	ऽ	हे	ऽ	सो	ऽ	हे	मो	ति	य	न	सेहऽ	रा	ऽ
3				X			2				0		

अन्तरा

ग	म	नी ध	नीध	सां	–	सां	ध	ध	नीसांसां	गं	गं	सां	सां
स	ज	ध	जऽ	आ	ऽ	ई	सु	घ	रऽऽ	ब	नी	ऽ	के
3				X			2				0		
सां	(सां)	नी	ध	सां	नी	ध	म	–	ग	गम	ग	–	सा
नै	ऽ	न	न	क	ज	ऽ	रा	ऽ	ऽ	सऽ	जा	ऽ	या
3				X			2				0		

राग – अल्हैया बिलावल
ध्रुवपद
ताल–तीव्रा

रचना–साहित्य

स्थायी : आज बधाई, नंद घर बाजत।
भयो ब्रज चंद, कुँवर कन्हाई।।

अन्तरा : घर घर वन्दन वार सजावत।
मंगल गावत यशुमति माई।।

स्थायी

ग	प	सांध	नी	सां	–	सां
आ	ऽ	ज	ब	धा	ऽ	ई
2		3		X		
सांध	नी	ध	प	ध	म	ग
नं	द	घ	र	बा	ज	त
2		3		X		
ग	म	प	ग	म	रे	सा
भ	यो	बृ	ज	चं	ऽ	द
2		3		X		
ध	नी	सां	नी	धप	ध	मगरे
कुं	व	र	क	न्हा	ऽ	ईऽऽ
2		3		X		

अन्तरा

ग	प	नीध	नी	सां	सां	सां
घ	र	घ	र	बं	द	न
2		3		X		
गं	रें	गं	मं	गं	रें	सां
वा	ऽ	र	स	जा	व	त
2		3		X		
गं	मं	पं	गं	मं	रें	सां
मं	ऽ	ग	ल	गा	व	त
2		3		X		
ध	नी	ध	प	ध	म	गरे
य	शु	म	ति	मा	ऽ	ईऽ
2		3		X		

राग – अल्हैया बिलावल

विलम्बित ख्याल

ताल–रूपक

रचना–साहित्य

स्थायी : एरि आज गोकुल बाजत बधाई।
नंद घर जायो कुंवर कन्हाई।।

अन्तरा : बाजत मृंदग ढोल ढफ बांसुरी।
मंगल गावत यशुमति माई।।

स्थायी

मग	मरे	गप	धनी	सां	सां	सा
ए ऽ	ऽरि	आऽ	जऽ	गो	कु	ल
2		3		X		
गम	गम	गमप	गमरे	म	रे	सा
बाऽ	ऽऽ	जऽऽ	तऽब	धा	ऽ	ई
2		3		X		
सा	गमरे	गम	प	ध	नी	सां
नं	दऽऽ	घऽ	र	जा	ऽ	यो
2		3		X		
सारें	सांसां	धनी	धप	ध	म	ग
कुऽ	वऽ	रऽ	ऽऽ	न्हा	ऽ	ई
2		3		X		

अन्तरा

धप	मग	गप	नीधनी	सां	–	सां
बाऽ	ऽऽ	जऽ	तमृ	दं	ऽ	ग
2		3		X		
ग	मंरें	गंमं	पंमंगं	मं	रें	सां
ढो	ऽऽ	लऽ	ढफऽ	बां	सु	री
2		3		X		
ग	मरे	गप	नीधनी	सां	सां	सां
मं	ऽऽ	गऽ	लऽ	गा	व	त
2		3		X		
सांरे	सांसां	धनी	धप	ध	म	ग
य ऽ	शुऽ	मऽ	तिऽ	मा	ऽ	ई
2		3		X		

राग – भिन्न षड़ज

ध्रुवपद

ताल – चौताल

रचना–साहित्य

स्थायी : जयति जय श्री गोविन्द धरनी धर माधो मुकुंद।
नंद नंदन गोकुल चंद, गोप ग्वाल आनंद कंद।।

अन्तरा : जोई जोई ध्यावत शुभ फल पावत।
काटत सब द्वंद फंद।।

स्थायी

सां	नी	ध	म	म	म	ग	म	ध	नी	सां	सां
ज	य	ति	ज	ऽ	य	श्री	ऽ	गो	वि	ऽ	द
X		0		2		0		3		4	
नी	रें	नी	ध	म	म	गऽ	ग	म	ग	–	सा
ध	र	नी	ऽ	ध	र	माऽ	धो	मु	कुं	ऽ	द
X		0		2		0		3		4	
ध़	–	ऩी	सा	म	म	ग	म	नीध	नी	सां	सां
नं	ऽ	द	नं	द	न	गो	कु	ल	चं	ऽ	द
X		0		2		0		3		4	
गं	–	सां	नी	ध	म	ग	ग	म	ग	–	सा
गो	ऽ	प	ग्वा	ऽ	ल	आं	नं	द	कं	ऽ	द
X		0		2		0		3		4	

अन्तरा

मग	–	म	नीध	–	नी	सां	–	–	सां	–	सां
जो	ऽ	ई	जो	ऽ	ई	ध्या	ऽ	ऽ	व	ऽ	त
X		0		2		0		3		4	
ध	नी	–	सां	–	सां	गं	–	–	सां	–	सां
शु	भ	ऽ	फ	ऽ	ल	पा	ऽ	ऽ	व	ऽ	त
X		0		2		0		3		4	
गं	सां	नी	ध	म	ग	म	ग	ध	नी	सां	सां
का	ऽ	ट	त	स	ब	द्वं	ऽ	द	फं	ऽ	द
X		0		2		0		3		4	

राग – झिंझोटी

छोटा ख्याल

ताल–त्रिताल

रचना–साहित्य

स्थायी : कौन जतन करि प्रभु को रिझाऊँ।
बिन हरि कृपा कैसे गुन गाऊँ।।

अन्तरा : तू ही मेरो एक सहारो।
सुमिर सुमिर जलधि तरजाऊँ।।

स्थायी

ग	म	रे	ग	ऩी	सा	नीध़	प़	ध़	सा	रे	म	ग	–	ग	–
कौ	ऽ	न	ज	त	न	कऽ	रि	प्र	भु	को	रि	झा	ऽ	ऊँ	ऽ
0				3				X				2			
सां	नी	ध	प	नी	ध	प	म	ध	प	म	ग	सांनी़	धप़	मग़	रेसा़
बि	न	ह	रि	कृ	ऽ	पा	ऽ	कै	से	गु	न	गाऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऊँऽ
0				3				X				2			

अन्तरा

धप़	म	प	ध	सां	–	सां	–	नीसां़	रें	नी	सां	नी	–	ध	प
तूऽ	ऽ	ही	ऽ	मे	ऽ	रो	ऽ	ए	ऽऽ	क	स	हा	ऽ	रो	ऽ
0				3				X				2			
ध	म	प	ग	मग़	रेनीध़	प़–	प़–	ध़	सा	रे	ग	ग	म	ग	–
सु	मि	र	सु	मिऽ	रऽऽ	भऽ	वज़	ल	धि	त	र	जा	ऽ	ऊँ	ऽ
0				3				X				2			

राग – देवगिरी बिलावल

ध्रुवपद

ताल–चौताल

रचना–साहित्य

स्थायी : अधरन मुरली धरन नटवर नागर वासुदेव देवकी सुत।
यदुपति यशोदा नंद।।

अन्तरा : दीनानाथ जगत्नाथ, राधवर लक्ष्मी नाथ।
कमल नयन कमला पति काटो सब जगत् फंद।।

स्थायी

ग	ग	म	ग	रे	ग	म	ग	रे	ग	रे	सा
अ	ध	ऽ	र	ऽ	न	मु	र	ली	ध	र	न
X		0		2		0		3		4	
ग	रे	–	सा	ध़	प़	ग	ग	म	ग	रे	ग
न	ट	ऽ	व	ऽ	र	ना	ऽ	ऽ	ग	ऽ	र
X		0		2		0		3		4	
ग	रे	ग	प	–	प	ध	नी	सां	सां	ध	प
वा	ऽ	सु	दे	ऽ	व	दे	ऽ	व	की	सु	त
X		0		2		0		3		4	
ध	प	–	म	ग	ग	म	ग	रे	ग	रे	सा
य	दु	ऽ	प	ऽ	ति	य	शो	दा	नं	ऽ	द
X		0		2		0		3		4	

अन्तरा

प	प	प	नी	ध	नी	सां	सां	सां	सां	रें	सां
दी	ऽ	ना	ना	ऽ	थ	ज	ग	त	ना	ऽ	थ
X		0		2		0		3		4	
सां	रें	गं	मं	गं	रें	रें	गं	रें	सां	रें	सां
रा	ऽ	धा	ऽ	व	र	ल	ऽ	क्ष्मी	ना	ऽ	थ
X		0		2		0		3		4	
सां	सां	ध	प	म	ग	म	ग	रे	ग	प	प
क	म	ल	न	य	न	क	म	ला	ऽ	प	ति
X		0		2		0		3		4	
प	ध	प	म	ग	ग	म	ग	रे	ग	रे	सा
का	ऽ	टो	ऽ	स	ब	ज	ग	त	फं	ऽ	द
X		0		2		0		3		4	

राग – विभास

छोटा ख्याल

ताल–त्रिताल

रचना–साहित्य

स्थायी : ननदिया कैसे भरूं गगरिया।
दूर नगरिया कठिन डगरिया।।

अन्तरा : बैरी जेठानी और दोरानी ताने।
सुनत बीती सगरी उमरिया।।

स्थायी

												–	धध	पप	गप
												ऽ	नऽ	नऽ	दिऽ
ध	–	प	–	ग	ग	ग	प	ग	रे	सा	सा	–	ध	ध	ध
या	ऽ	ऽ	ऽ	कै	से	भ	रूं	ग	ग	रि	या	ऽ	दू	र	न
X				2				0				3			
सा	सा	सा	–	ग	प	ध	प	सांसां	धप	गरे	सा	–,		मुखड़ा	
ग	रि	या	ऽ	क	ठि	न	ड	गऽ	रिऽ	याऽ	ऽऽ	ऽ,			
X				2				0				3			

अन्तरा

											धप	ग	प	–	ध
											बैऽ	ऽ	री	ऽ	जे
सां	–	सां	सां	सारें	गं	रें	सां	सां	–	ध	प	सारें	गं	रें	–सां
ठा	ऽ	नी	ऽ	औऽ	र	दो	रा	ऽ	नी	ऽ	ता	ऽऽ	ने	ऽ	ऽसु
X				2				0				3			
ध	ध	प	प	ग	ग	प	ध	प	सांसां	धप	गरे	सा	–		
न	त	बी	ती	स		ग	री	उ	मऽ	रिऽ	याऽ	ऽ	ऽ		
X				2				0				3			

राग – मालगुंजी

छोटा ख्याल

ताल–त्रिताल

रचना–साहित्य

स्थायी : मन नही माने कैसे समझाऊँ।
इत उत भटकत कैसे समझाऊँ।।

अन्तरा : भरम भरो मन जग में भटक्यो।
आतम ज्ञान पाप तर जाऊँ।।

स्थायी

सा(सा)	ध़	–	नी	सा	–	ग	–	रे	ग	म	ग	रे	–	सा	सा
मन्न	ना	ऽ	हिं	मा	ऽ	ने	ऽ	कै	से	स	म	झा	ऽ	ऊंऽ	म
3				X				2				0			
(सा)	ध़	–	नी	सा	–	ग	–	रे	ग	म	ग	रे	ग	रेसा	ग
न	ना	ऽ	हि	मा	ऽ	ने	ऽ	कै	से	स	म	भा	ऽ	ऊँऽ	इ
3				X				2				0			
म	ध	–	नी	सां	सां	सां	सां	नी	धप	म	ग	रे	ग	रेमा	सा
त	उ	ऽ	त	भ	ट	क	त	कै	सेऽ	स	म	झा	ऽ	उऽ	म
3				X				2				0			

अन्तरा

															ग
															भ
म	ध	–	नी	सां	सां	सां	सां	ध	नी	सारें	गंमं	गं	रें	साऽ,	गं
र	म	ऽ	भ	रो	ऽ	म	न	ज	ग	मेंऽ	ऽऽ	भ	ट	क्यो,	आ
0				3				X				2			
–	गं	–	मं	गं	रें	सांऽ	नी	ध	प	म	ग	रे	ग	रेसा,	सा
ऽ	त	ऽ	म	ज्ञा	ऽ	नऽ,	पा	ऽ	प	त	र	जा	ऽ	ऊँऽ,	म
0				3				X				2			

राग – जोगिया

छोटा ख्याल

ताल–त्रिताल

रचना–साहित्य

स्थायी : हरि सों नेह लगा तू मनवा।
हरि पार लगा तू मनवा, दूजो नहि जाके मैं जाऊँ शरनवा।।

अन्तरा : मेरो दाता सकल जगत् को, फिर तू काहे दर–दर भटक्यों।
नाहि तेरो कोऊ सांचो सुरजनवा।।

स्थायी

सा	रे	म	–	ध	म	प	ध	सां	–	नी	सां	म	म	रे	सा
ह	रि	सौं	ऽ	ने	ऽ	ह	ल	गा	ऽ	तू	ऽ	म	न	वा	ऽ
0				3				X				2			
सा	रे	म	–	ध	म	प	ध	सां	–	नी	सां	ध	ध	प	–
ह	रि	सौं	ऽ	पा	ऽ	र	ल	गा	ऽ	तू	ऽ	म	न	वा	ऽ
0				3				X				2			
सां	–	(सां)	–	ध	ध	म	म	ग	–	म	(म)	म	गम	रे	सा
दू	ऽ	जो	ऽ	नां	हि	जा	के	जा	ऽ	ऊँ	श	र	नऽ	वा	ऽ
0				3				X				2			

अन्तरा

<u>ध</u>	म	प	<u>ध</u>	सां	–	सां	–	<u>रें</u>	<u>रें</u>	गं	(मं)	<u>रें</u>	<u>रें</u>	सां	–
मे	ऽ	रो	ऽ	दा	ऽ	ता	ऽ	स	क	ल	ज	ग	त	को	ऽ
0				3				X				2			
सां	सां	सां	–	सां	(सां)	ध	म	<u>ध</u>	म	म	म	प	प	प	–
फि	र	तू	ऽ	का	ऽ	हे	में	द	र	द	र	भ	ट	क्यो	ऽ
0				3				X				2			
सां	–	(सां)	<u>ध</u>	<u>ध</u>	<u>ध</u>	म	म	म	ग	म	(म)	<u>रे</u>	<u>रे</u>	सा	–
ना	ऽ	हि	ते	ऽ	रो	को	ऊ	सां	चो	सु	र	ज	न	वा	ऽ
0				3				X				2			

राग – शुद्ध सारंग

विलम्बित ख्याल

ताल–विलंबित–एकताल

रचना–साहित्य

स्थायी : तपन लागी कारी दुपहरिया पिया नाहीं जरे मोरा जियरा।

अन्तरा : जेठ महीना जनम का बैरी,जब ते गये पग धरो न देहरा।।

स्थायी

नीसारेम	रेसा	नी॒	नीप॒	नीसा	सासासा	मरे	रे	सा	सा	सा	नीसा
तऽऽऽ	पन	ला	गीऽ	काऽ	रीऽदु	प	ह	री	ऽ	या	ऽऽ
3		4		X		0		2		0	
नी॒	सा	रे	×Þ	प–	प–	×Þप	×Þपनीसां	नीध	प	मरे	सानीसा
पि	या	घ	र	नाऽ	हीऽ	जऽ	रेऽऽऽ	मोऽ	रा	जिय	राऽऽ
3		4		X		0		2		0	

अन्तरा

×Þ	पनी	–	–नी	सां	सां	नीसां	रेंमं	रें	सां	नी–	ध्प–
जे	ऽ	ठ	ऽम	ही	ना	जऽ	नऽ	म	का	बैऽ	रीऽ
3		4		X		0		2		0	
प×Þ	प	नी	–सां	नी	–	प	प	×Þ	प(प)	मरे	सानीसा
ज	ब	ते	ऽग	ये	ऽ	प	ग	ध	रो न	देह	राऽऽ
3		4		X		0		2		0	

राग – गुणकली

छोटा ख्याल (मध्यलय)

ताल–त्रिताल

रचना–साहित्य

स्थाई : तू ही करतार सकल जगत् को।
परवर दिगार पालन हार।।

अन्तरा : तेरे दर का मैं हूँ भिखारी।
तुम हीकरोगे नैया पार।।

स्थायी

												ध	म	रेसा	साध
												तू	ही	कऽ	रऽ
सा	–	–	सा	ध	ध	सा	सा	रे	रे	सा	–	सा	रे	म	म
ता	ऽ	ऽ	र	स	क	ल	ज	ग	त	को	ऽ	प	र	व	र
x				2				0				3			
म प	–	प		धध	पम	पध	सां–	सांसां	धप	मम	रेसा				
दि	गा	ऽ	र	पाऽ	ऽऽ	लऽ	नऽ	हाऽ	ऽऽ	ऽऽ	रऽ	मुखड़ा			
x				2				0				3			

अन्तरा

												ध	म	प	ध
												ते	ऽ	रे	ऽ
सां	सां	सां	–	ध	–	सां	सां	रें	–	सां	–	सारें	मं	रें	सां
द	र	को	ऽ	मैं	ऽ	हूँ	भि	खा	ऽ	री	ऽ	तुऽ	म	ही	क
x				2				0				3			
ध	–	म	–	सारें	सांसां	पध	पम	सांसां	ध म	मम	रेसा	मुखड़ा			
रो	ऽ	गे	ऽ	नैऽ	ऽऽ	याऽ	ऽऽ	पाऽ	ऽऽ	ऽऽ	रऽ				
x				2				0				3			

राग – नटभैरव

बड़ा ख्याल

ताल–विलम्बित एकताल

रचना–साहित्य

स्थाई : सांचो मेरो दाता सिरजन हार।
करतार दीन दुखी को पालन हार सरदार।।

अन्तरा : भटकत फिरूं मैं दीन जगत् को।
तेरो भरोसो करोगे भवपार, तू ही खेवन हार।।

स्थायी

गमध–प– मगरे,गम	म–प– गगगम	रे,सागम रे–सा–	गमध– ––धसां	ध–प– गमगम	रे–सागम रे–सा–
सांऽऽऽचोऽ ऽऽऽमेरो	दाऽताऽ सिरजन	हारकर ताऽरऽ	दीऽनऽ ऽऽऽदु	खीऽकोऽ पाऽलन	हाऽरसर दाऽरऽ
4	x	0	2	0	3

अन्तरा

मपध नी सांसां–सां	ध–नीसां रेंरेंसां–	गं–गंमं रें–सां–	धसांध प गमगम	रे–सासा गमरेसा	धनीसा रे–सा–
भटकत फिरूंऽमैं	दीऽनज गतकोऽ	तेऽरोभ रोऽसोंऽ	करोगेऽ ऽऽभव	पाऽऽर तूऽहीऽ	खेऽवन हाऽरऽ
4	x	0	2	0	3

राग – श्याम कल्याण

विलम्बित ख्याल

ताल–विलम्बित एकताल

रचना–साहित्य

स्थाई : अजहूँ नहि आये बहुत दिन भये।
गिन गिन बीती सारी सारी रतियाँ।।

अन्तरा : जब से गये ऐसे भये निरमोही।
मोहे न जानत हम सों कर गये झूँठी झूँठी बतियाँ।।

स्थायी

×Þपध	×Þ प्र	गम	रेसा	रे–	रे–	सा	नी़सा	नी़सा	रे×Þ	प–	पप
अऽऽ	जऽ	हूंऽ	नहिं	आऽ	ऽऽ	ये	ऽऽ	बहु	तदि	नऽ	भये
3		4		X		0		2		0	
×Þप्	नीसां	नीध	पऽ	×Þपध्	×Þप्	गम	रे	सा	नी़सारे	नी़	सा
गिन	गिन	बीऽ	तीऽ	साऽऽ	रीऽ	साऽ	री	र	तिऽऽ	यां	ऽ
3		4		X		0		2		0	

अन्तरा

×Þप़	नीसां	सां–	सांसां	नीसां	रेंसां	नीध	प–	नीसारें	नीसां	नीनीसां	नीधप–
जब	सेग	येऽ	ऐसे	भये	निर	मोऽ	हीऽ	मोऽऽ	हेन	जाऽऽ	नऽतऽ
3		4		X		0		2		0	
नीसां	नीसारेंमं	नीध	पप	×Þपध्र	×Þप़	ग	मरे	सासा	नीसारे	नी	सा
हम	सोंऽऽऽ	कर	गये	झूऽऽ	ठीऽ	झू	ऽठि	बति	ऽयाऽ	ऽ	ऽ
3		4		X		0		2		0	

राग – मधुवन्ती

धमार

ताल–धमार

रचना–साहित्य

स्थाई : मानत नाहीं गुमान भरी।
ऐसी मद की एनी।।

अन्तरा : नैन चलावत, सैन जतावत।
इत उत चितवत भुवन खरी।।

स्थाई

मं	ग	$^{सा}$रे	सा	रे	-	सा	$^{रे}$नी	सा	$^{मं}$ग	मंप	$^{मं}$ग	$^{सा}$रे	सा
मा	ऽ	न	त	ना	ऽ	हीं	गु	मा	न	ऽऽ	भ	री	ऽ
३				x					२		०		
$^{मं}$ग	मं	प	नी	सां	नी	-	प	गसा	$^{मं}$ग	मंप	ग	$^{सा}$रे	सा
ऐ	ऽ	सी	ऽ	म	द	ऽ	की	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	ए	ऽ	नी
३				x					२		०		

अन्तरा

$^{मं}$ग	मं	-	प	-	नी	नी	सां	-	-	सां	-	सां	-
नै	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	च	ला	ऽ	ऽ	व	ऽ	त	ऽ
x					२		०			३			
$^{सां}$नी	$^{सां}$नी	$^{सां}$नी	सां	-	-	गं	$^{सां}$रें	-	-	सां	-	सां	-
सै	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	ज	ता	ऽ	ऽ	व	ऽ	त	ऽ
x					२		०			३			
$^{सां}$नी	$^{सां}$नी	-	$^{सां}$नी	-	नी	सां	$^{सां}$ध	$^{सां}$ध	-	प	-	प	-
इ	त	ऽ	उ	ऽ	त	ऽ	चि	त	ऽ	व	ऽ	त	ऽ
x					२		०			३			
मं	ग	सा	$^{मं}$ग	-	$^{मं}$ग	मंप	ग	$^{सा}$रे	सा	मं	ग	$^{सा}$रे	सा
भु	व	ऽ	न	ऽ	ऽ	खऽ	री	ऽ	ऽ	मा	ऽ	न	त
x					२		०			३			

राग – मधुवन्ती

बड़ा ख्याल

ताल एकताल (विलंबित लय)

रचना–साहित्य

स्थाई : सांचो तेरो नाम, तू ही करतार।
तू ही सकल गुन को आधार।।

अन्तरा : तू ही दाता, तू ही विधाता।
तू ही करत भव पार।।

स्थाई

प	(प)	^{म}ग	रेसा	$^{सा}$रे	सा	नीसा	सा,नीसा	^{म}गम	प	प	मप
सां	ऽ	चो	तेरो	ना	म	तूऽ	ही,ऽऽ	कर	ता	ऽ	रऽ
३		४		X		०		२		०	
^{म}गम	पनी	सांगं	रेंसां	नी	नीसां	ध	प	प(प)	^{म}ग	$^{सा}$रे	सा
तूऽ	हीऽ	सक	लऽ	गु	नऽ	को	ऽ	आऽ	धा	ऽ	र
३		४		X		०		२		०	

अन्तरा

^{म}ग	म	प	नी	सां	सां	सां	-	$^{सां}$नी-	सांगं	$^{सां}$रें	सां
तू	ऽ	ही	ऽ	दा	ऽ	ता	ऽ	तूऽ	हिवि	धा	ता
३		४		X		०		२		०	
$^{सां}$नी	नीसां	$^{नी}$ध	प	प	मप	^{म}गसा,	$^{सा}$ग-मप	मग	$^{सा}$रेसा	सा	नीसा
तू	हीऽ	क	र	त	ऽऽ	ऽऽ,	भऽवऽ	पाऽ	ऽऽ	र	ऽऽ
३		४		X		०		२		०	

राग – मधुवन्ती

छोटा ख्याल

ताल त्रिताल (मध्य लय)

रचना–साहित्य

स्थाई : सुमिरन कर ले मेरे मना।
सब जग झूठो राम बिना।।

अन्तरा : नारद शारद ध्यान धरत नित।
नाम रटत तरे संत जना।।

स्थाई

															प
															सु
(प)	^{म}ग	-	रेसा	रे	रे	सा	-	नी़	सा	^{म}ग	मं	(प)	-	^{म}ग,	^{म}ग
मि	र	ऽ	नऽ	क	र	ले	ऽ	मे	ऽ	रे	म	ना	ऽ	ऽ,	स
३				X				२				०			
मं	प	-	नी	सां	नी	ध	प	^{म}ग	सा,	^{म}ग	मंप	मंग	$^{सा}$रे	सा,	प
ब	ज	ऽ	ग	झू	ऽ	ठो	ऽ	रा	ऽ,	म	बिऽ	नाऽ	ऽ	ऽ,	सु
३				X				२				०			

अन्तरा

															^{म}ग
															ना
मं	प	-	नी	सां	-	सां	सां	$^{सां}$नी	-	सां	गं	$^{सां}$रें	रें	सां	सां
ऽ	र	ऽ	द	शा	ऽ	र	द	ध्या	ऽ	न	ध	र	त	नि	त
३				X				२				०			
गं	$^{सां}$रें	सां	सां	नी	नीध	प	प	^{म}ग	सा	^{म}गम	प	मंग	$^{सा}$रे	सा,	प
ना	ऽ	म	र	ट	तऽ	त	रे	सं	ऽ	तऽ	ज	नाऽ	ऽ	ऽ,	सु
३				X				२				०			

राग – मधुवन्ती
त्रिवट
ताल–त्रिताल (मध्य लय)

रचना–साहित्य

स्थाई : क्ड़ान्धा, क्ड़ान्धा, क्ड़ान्धा किट तक धुम किट तक धिता।
धा धिलांग धा धुम किट धुम किट ध्लांग धा,
ध्लांग धा, ध्लांग धा किट तक धुम किट तक धिता।

अन्तरा : धा धिलांग धा धुम किट धुम किट धा धिलांग धा धुमकिट धा
धा गदिगिन, धा गदि गिन गदि गिन ध्लांग धा, ध्लांग
धा, ध्लांग धा किट तक धुम किट तक धिता।

स्थाई

		(ध)प म॑म॑ प (म)गग कड़ा ऽन् धा कड़ाऽ ०	ग गग रे सासा ऽ न्धाऽ कड़ा ऽन् ३
सा सासा गग गग धा किट तक धुम X	म॑म॑ म॑म॑ प प किट तक धि त्ता २	सा सानी -ध नी धा धिलां ऽग धा ०	पप धध म॑म॑ पप धुम किट धुम किट ३
- पप म॑म॑ (ध)पप ऽ ध्लाऽ ऽन गऽ X	ग - - पप धा ऽ ऽ ध्लाऽ २	म॑म॑ (ध)पप ग - ऽन् गऽ धा ऽ ०	- रेसा -सा सा ऽ ध्ला ऽन् ग ३
सा सासा गग गग धा किट तक धुम X	म॑म॑ म॑म॑ प प किट तक धि त्ता २		

अन्तरा

ग गम॑ -म॑ प धा धिलां ऽग धा ०	नीनी नीनी नीनी नीनी धुम किट धुम किट ३	ग गम॑ -म॑ प धा धिलां ऽग धा X	नीनी नीनी सां - धुम किट धा ऽ २
नी पप पप ध धा गदि गिन धा ०	म॑म॑ म॑म॑ पप पप गदि गिन गदि गिन ३	- पप म॑म॑ (ध)पप ऽ ध्लाऽ ऽन् गऽ X	ग ग - पप धा ऽ ऽ ध्लाऽ २
म॑म॑ पप ग - ऽन् गऽ धा ऽ ०	- रे -सा सा ऽ ध्ला ऽन् ग ३	सा सासा गग गग धा किट तक धुम X	म॑म॑ म॑म॑ प प किट तक धि त्ता २

राग – मध्यमाद सारंग

छोटा ख्याल

ताल त्रिताल

रचना–साहित्य

स्थाई : जाने दो मोहे छैल गिरधारी।
मैं अबला ब्रज की नारी।।

अन्तरा : तुम हो निपट निडर अति निरलज।
आवत लाज मोहे अति भारी।।

स्थाई

															सा
															जा
नी	सा	रे	प	म	-	-	-	^{म}रे	-	^{म}रे	म	रे	-	सा,	नी
ने	दो	मो	हे	छै	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ	गि	र	धा	ऽ	री,	मैं
३				x				२				०			
सा	^{म}रे	-	म	प	-	प	प	नीनी	पम	पनी	सां-	^{म}रे	-	सा,	सा
ऽ	अ	ऽ	ब	ला	ऽ	ब्र	ज	कीऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ना	ऽ	री,	जा
३				x				२				०			

अन्तरा

^{प}म	प	नी	-	नी	सां	सां	सां	रें	रें	रें	मं	रे	रें	सां	सां
तु	म	हो	ऽ	नि	प	ट	नि	ड	र	अ	ति	नि	र	ल	ज
३				x				२				०			
^{म}रें	मं	रें	सां	(नी)	-	प	प	रे	म	नीनी	पम	रे	-	सा,	सा
आ	ऽ	व	त	ला	ऽ	ज	मो	हे	ऽ	अऽ	तिऽ	भा	ऽ	री,	जा
३				x				२				०			